

# डॉ. गैरी येट्स, पुस्तक 12, सत्र 5, आमोस, असीरियन संकट की पृष्ठभूमि

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स द्वारा लघु भविष्यवक्ताओं पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया व्याख्यान है। यह आमोस, असीरियन संकट की पृष्ठभूमि पर व्याख्यान 5 है।

हम लघु भविष्यवक्ताओं के अपने अध्ययन के पांचवें सत्र में हैं, और हमने परिचयात्मक सामग्री के साथ मंच तैयार कर लिया है।

अब, हम छोटे भविष्यवक्ताओं की अलग-अलग पुस्तकों का अध्ययन शुरू करने जा रहे हैं। हम आमोस की पुस्तक से शुरू करने जा रहे हैं। मैं बस यह बताकर शुरू करना चाहता हूँ कि हम आमोस से क्यों शुरू करने जा रहे हैं।

हमारे पिछले कुछ पाठों में, हमने 12 की पुस्तक के बारे में बात की थी कि कैसे इन बारह पुस्तकों में एक साहित्यिक एकता है, और यह तथ्य कि यहूदियों ने इसे कम से कम ईसा के समय से दो सौ साल पहले मान्यता दी थी। लेकिन जब हम अलग-अलग पुस्तकों को देखते हैं, तो विहित क्रम का पालन करने के बजाय, हम अनिवार्य रूप से कालानुक्रमिक क्रम का पालन करने जा रहे हैं। आपको याद होगा कि बारह की पुस्तकें अनिवार्य रूप से कालानुक्रमिक तरीके से व्यवस्थित हैं।

सभी पुस्तकें जिनमें ऐतिहासिक संकेत और उपरिलेख हैं, एक बुनियादी क्रम और प्रगति का पालन करती हैं जहाँ हम असीरियन काल से बेबीलोन काल और निर्वासन के बाद के काल में आगे बढ़ते हैं। लेकिन कुछ विषयगत व्यवस्थाएँ भी हैं। होशे की पुस्तक को पश्चाताप और धर्मत्याग और उन सभी चीजों के विषय को पेश करने के लिए सबसे आगे क्यों रखा गया है, इसके कुछ कारण हो सकते हैं।

कालानुक्रमिक रूप से, उत्तरी इस्राएल राज्य में सेवा करने वाले इन भविष्यवक्ताओं में से पहला भविष्यवक्ता आमोस था। हम भी वहीं से शुरू करने जा रहे हैं। इसलिए हम अपना अध्ययन वहीं से शुरू करने जा रहे हैं।

कई मायनों में, आमोस एक आदर्श भविष्यवक्ता है। इसलिए मुझे लगता है कि यह हमारे लिए एक अच्छी जगह है जहाँ हम इन भविष्यवक्ताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और समझ सकते हैं कि उनका संदेश इसराइल के लोगों के लिए क्या था। याद रखें, जब हम बारह की पुस्तक पढ़ते हैं, तो आठवीं शताब्दी में असीरियन भविष्यवक्ताओं का एक समूह है जो उत्तर में इसराइल के लोगों और दक्षिण में यहूदा के लोगों को इस असीरियन संकट के बारे में उपदेश दे रहे हैं।

उत्तर के भविष्यवक्ताओं में आमोस और होशे शामिल होंगे। योना भी उत्तरी राज्य में एक भविष्यवक्ता है और वह नीनवे के शहर में ही प्रचार करने जा रहा है। मीका और यशायाह आठवीं सदी के भविष्यवक्ता हैं जो दक्षिण में यहूदा के राज्य में प्रचार करते हैं।

फिर 12 की पुस्तक में, हमारे पास भविष्यवक्ताओं का एक समूह है जो बेबीलोन के संकट से निपटता है। फिर, आखिरी चार भविष्यवक्ताओं वे लोग होंगे जिन्हें परमेश्वर ने निर्वासन के बाद के समुदाय में प्रचार करने और सिखाने के लिए भेजा था। तो मैं जो करना चाहूँगा वह यह है कि हम आमोस से शुरू करें, छोटे भविष्यवक्ताओं के मंत्रालय की कालानुक्रमिक शुरुआत, असीरियन संकट के बारे में बात करने के लिए और क्यों वह इज़राइल के इतिहास में एक महत्वपूर्ण समय था और क्या चल रहा था, भगवान ने इन भविष्यवक्ताओं को क्यों भेजा और उनका मिशन और उनका उद्देश्य क्या था।

ईश्वर ने आठवीं शताब्दी में शास्त्रीय भविष्यद्वक्ताओं को इसलिए खड़ा किया क्योंकि इस्राएल के सामने एक राष्ट्रीय संकट था। मूसा के समय में व्यवस्थाविवरण अध्याय 18, श्लोक 5, 18-15 में, ईश्वर ने मूसा से कहा कि वह इस्राएल के लोगों के लिए एक भविष्यद्वक्ता खड़ा करने जा रहा है। हमने अपने परिचयात्मक वीडियो में उस श्लोक को देखा, और हमने देखा कि वहाँ क्या हो रहा है कि ईश्वर वादा करता है कि वह इस्राएल के लोगों के लिए भविष्यद्वक्ताओं की एक श्रृंखला को खड़ा करेगा ताकि वे उनके लिए घोषणा करें, उन्हें ईश्वर का वचन सुनाएँ, अनिवार्य रूप से इस्राएल के लिए वही भूमिका निभाएँ जो मूसा ने लोगों के लिए उनके प्रारंभिक चरणों में निभाई थी।

शमूएल, नातान, एलियाह और एलीशा जैसे भविष्यद्वक्ताओं के पद के आरंभिक दिनों में मुख्य रूप से राजाओं की सेवा करने वाले थे। लेकिन आठवीं शताब्दी में, भविष्यद्वक्ताओं की सेवा, और जिस कारण से हमारे पास इन लेखन भविष्यद्वक्ताओं का उदय हुआ, जिनके संदेश हिब्रू कैनन में दर्ज हैं, वह यह है कि अब एक राष्ट्रीय संकट है। वे केवल राजाओं को ही उपदेश नहीं दे रहे हैं।

वे केवल इस्राएल में राजा-निर्माता नहीं हैं। वे लोगों को उपदेश दे रहे हैं और इस भयानक राष्ट्रीय संकट के आने से पहले उन्हें पश्चाताप करने के लिए बुला रहे हैं। अमोस के मंत्रालय के दौरान जो बात क्षितिज पर मंडरा रही है, वह यह है कि असीरिया राष्ट्र एक शक्तिशाली साम्राज्य बन रहा है।

वे इस साम्राज्य का विस्तार करने के लिए पश्चिम की ओर देख रहे हैं और इसमें इज़राइल और यहूदा और सीरिया, फिलिस्तीन के सभी राष्ट्र शामिल होंगे। आठवीं शताब्दी में आने से पहले, यह समझना महत्वपूर्ण है कि इज़राइल का असीरिया के साथ एक पूर्व इतिहास था जो नौवीं शताब्दी तक फैला हुआ था। मैं बस कुछ घटनाओं का उल्लेख करना चाहता हूँ।

853 ईसा पूर्व में, हम जानते हैं कि राजा अहाब और सीरिया, फिलिस्तीन के राजाओं के गठबंधन ने असीरियन सेना से लड़ाई लड़ी थी और मूल रूप से क्रक़र की लड़ाई में उन्हें रोक दिया था। उस समय से ही, असीरिया पश्चिम की ओर देख रहा था और इस लड़ाई में शामिल असीरियन राजाओं ने एक बड़ी जीत का दावा किया। लेकिन वास्तविकता यह है कि वे सीरिया, फिलिस्तीन में आगे नहीं बढ़े।

संभावना यह है कि अहाब और सीरिया, फिलिस्तीन के ये अन्य राजा, यह गठबंधन, इस बिंदु पर अशूरियों का सामना करने में सक्षम थे और इज़राइल को आगे अशूरियों के आक्रमण का

लक्ष्य बनने से रोक पाए। राजाओं की पुस्तक के बारे में दिलचस्प बात यह है कि अहाब को इज़राइल के सबसे बुरे राजा के रूप में याद किया जाता है। उसने इज़ेबेल से विवाह किया, यह दुष्ट महिला थी जिसने इज़राइल के उत्तरी राज्य में बाल पूजा को बढ़ावा दिया।

इसलिए, राजाओं की पुस्तक में करकार में इस महत्वपूर्ण उपलब्धि का उल्लेख तक नहीं है, संभवतः इसलिए क्योंकि राजाओं के लेखक उसे किसी भी चीज़ का श्रेय नहीं देना चाहते। राजाओं में ध्यान केवल ऐतिहासिक से ज़्यादा धार्मिक है। इसलिए अहाब, असीरियन सेना का सामना करने वाली इस महान सैन्य उपलब्धि का उल्लेख भी वहाँ नहीं किया गया है।

यह याद भी नहीं है, लेकिन असीरियन शिलालेखों और असीरियन अभिलेखों में इसका उल्लेख है। इसलिए हम जानते हैं कि 853 में, अहाब ने इस युद्ध में रथ और बड़ी संख्या में सैनिक लाए थे, और उसने सीरिया और फिलिस्तीन के राजाओं के इस गठबंधन को असीरियनों का सामना करने में मदद की। हालाँकि, 12 साल बाद 841 ईसा पूर्व में, हम जानते हैं कि अहाब के उत्तराधिकारी येहू को कर देने और असीरियन राजा शालमनेसर के अधीन होने के लिए मजबूर होना पड़ा।

बाइबिल के अलावा ब्लैक ओबिलिस्क में पुरातत्व की सबसे दिलचस्प खोजों में से एक है राजा येहू का असीरियन राजा के सामने झुकते हुए चित्र और उनके द्वारा असीरियन को यह श्रद्धांजलि लाने के बारे में एक शिलालेख। इस समय, इस्राएल के राजाओं और इस्राएल के लोगों दोनों की दुष्टता और धर्मत्याग और पाप और विद्रोह के कारण जो कुछ होने लगा है, व्यवस्थाविवरण 28 के वाचा के अभिशाप पहले से ही प्रभावी होने लगे हैं। परमेश्वर अपने अवज्ञाकारी लोगों को दंडित करने के लिए असीरियन का उपयोग कर रहा था।

इस समय, मुझे लगता है कि परमेश्वर अपने लोगों के धनुष पर तीर चला रहा है, उन्हें चेतावनी दे रहा है और उन्हें पश्चाताप करने और उसके साथ सब कुछ ठीक करने की आवश्यकता की याद दिला रहा है। तो यह इतिहास है क्योंकि हम पिछली सदी में, नौवीं सदी में वापस जाते हैं। दिलचस्प बात यह है कि उन्हें दंडित करने के बाद, परमेश्वर ने अहाब और येहू के समय के बाद, इस्राएल के लोगों के प्रति अविश्वसनीय दया और करुणा भी दिखाई थी क्योंकि उसने उन्हें अशूरियों के साम्राज्यवादी इरादों से इस अंतरराष्ट्रीय वर्चस्व से राहत दी थी और उन्हें, मेरा मानना है, अपना रास्ता बदलने, अपने तरीके बदलने और पूरी तरह से आशीर्वाद पाने का एक अंतिम अवसर दिया था, जैसा कि उसने उनके लिए शुरू में योजना बनाई थी।

असीरिया का साम्राज्य लंबे समय तक पतन के दौर से गुज़रा। लगभग 50 या 75 साल तक असीरिया का साम्राज्य अपनी आंतरिक समस्याओं से जूझता रहा। वित्तीय समस्याएँ भी थीं।

अशूर के नज़दीक दूसरे देशों से आक्रमण हुए। अशूरियों, अशूरियों के राजाओं और अशूरियों की सेनाओं को अपने घर के नज़दीक की चीज़ों से निपटना पड़ा। परमेश्वर ने उत्तरी इस्राएल राज्य में एक राजा को खड़ा किया था जिसका शासन इन राजाओं में से सबसे लंबा और सबसे सफल था।

उसका नाम यारोबाम द्वितीय था। हम 2 राजाओं के अध्याय 14 में पढ़ते हैं कि यारोबाम वास्तव में इस्राएल की सीमाओं को उससे कहीं ज़्यादा बढ़ाने में सक्षम था, जो उन्होंने विभाजित राजशाही के समय में कभी अनुभव नहीं किया था। कई वर्षों तक, इस्राएल अपने निकटतम पड़ोसी, अरामियों या सीरियाई लोगों के साथ संघर्ष में भी उलझा रहा था।

यारोबाम ने इस्राएल की सीमाओं और सीमाओं का विस्तार किया था। भविष्यवक्ता योना, जिसके बारे में हम इस पाठ्यक्रम में आगे अध्ययन करने जा रहे हैं, भविष्यवक्ता योना ही वह भविष्यवक्ता था जिसने यारोबाम को घोषणा की थी कि परमेश्वर उसे इस्राएल की सीमाओं का विस्तार करने की अनुमति देने जा रहा है। 2 राजा 14 को पढ़ने से हम समझते हैं कि परमेश्वर द्वारा इस्राएल को दिए गए इस आशीर्वाद का कारण यह नहीं था कि वहाँ राष्ट्रीय पुनरुत्थान हुआ था।

ऐसा नहीं था कि इस्राएल के लोगों ने अचानक ही अपने धर्मत्याग को त्याग दिया था और वे प्रभु का अनुसरण करने लगे थे। यह केवल तथ्य था कि परमेश्वर अपने लोगों पर दया और अनुग्रह दिखा रहा था। यारोबाम द्वितीय का शासन 40 से अधिक वर्षों तक चला।

ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि यारोबाम द्वितीय एक ईश्वरीय राजा था। वास्तव में, हम फिर से सोचेंगे कि राजाओं में इस राजा के बारे में बहुत अधिक विस्तृत रिपोर्ट होगी, इस तथ्य के प्रकाश में कि वह संभवतः इज़राइल का सबसे सफल और प्रभावी राजा था, वह राजा जिसने इज़राइल को समृद्धि के सबसे महान काल तक पहुँचाया। लेकिन 2 राजा 14 में उसके बारे में जो कुछ भी बताया गया है, उसमें हमें मुट्ठी भर आयतें ही मिलती हैं।

2 राजा 14, श्लोक 24 में कहा गया है कि उसने वही किया जो प्रभु की दृष्टि में बुरा था। वह नाबोत के पुत्र यारोबाम। के सभी पापों से दूर नहीं हुआ। इसलिए, राजाओं में जो महत्वपूर्ण है, वह फिर से, अहाब की तरह, उसकी राजनीतिक उपलब्धियाँ नहीं हैं, न ही वह समृद्धि जिसका इस समय के दौरान इस्राएल ने आनंद लिया।

यह केवल तथ्य है कि उसने वही किया जो प्रभु की नज़र में बुरा था। इस्राएल के सभी राजाओं के लिए यह कथन सत्य है कि वे अपने पिता यारोबाम के पापों में लगे रहे। इसलिए, यह तथ्य कि परमेश्वर ने इस्राएल की सीमाओं को बहाल किया, यह तथ्य कि परमेश्वर ने उन्हें अशूरियों से अस्थायी रूप से राहत दी, यह इस्राएल की धार्मिकता के कारण नहीं था।

यह परमेश्वर की दया और परमेश्वर की कृपा के कारण था। हम पहले ही वाचा के शापों के बारे में काफी बात कर चुके हैं, लैव्यव्यवस्था 26 और व्यवस्थाविवरण 28, लेकिन परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ केवल प्रतिशोध के सख्त सिद्धांत के अनुसार व्यवहार नहीं किया। वह केवल ऐसा परमेश्वर नहीं है जो कहता है, तुम यह करो। मैं तुम्हें आशीर्वाद दूंगा।

परमेश्वर ने सैकड़ों वर्षों की अवज्ञा और उसके विरुद्ध विद्रोह के बावजूद उत्तरी राज्य और दक्षिणी राज्य दोनों पर अविश्वसनीय रूप से दया दिखाई। इसलिए प्रभु इस्राएल के लोगों पर दया दिखाने जा रहा है। परमेश्वर ने दक्षिणी राज्य यहूदा के लिए भी यही किया क्योंकि यह अक्सर हमें राजाओं में बताता है, दाऊद के राजा की दुष्टता के बावजूद, परमेश्वर ने दाऊद के लिए एक

दीपक छोड़ा क्योंकि परमेश्वर ने एक वाचा का वादा किया था कि वह दाऊद के सिंहासन को स्थापित करने जा रहा था और दाऊद के बेटे हमेशा के लिए राज करेंगे।

तो, यारोबाम के समय में, दूसरे राजा अध्याय 14, श्लोक 26 में यह कहा गया है, और यहाँ परमेश्वर की कृपा और दया के बारे में जो जोर दिया गया है और जो कथन दिया गया है, उस पर ध्यान दें। वहाँ लिखा है, प्रभु ने इस्राएल के कष्ट को देखा और देखा कि इस्राएल का कष्ट बहुत कड़वा था। ठीक है।

सीरिया-फिलिस्तीन पर असीरियन आक्रमण का प्रारंभिक प्रभाव पहले ही हो चुका है। इस्राएलियों का सीरियाई लोगों के साथ लंबे समय तक संघर्ष, पराजय, क्षेत्र का नुकसान, और उसके परिणामस्वरूप होने वाली कठिन जीवन स्थितियों का सामना करना पड़ा। प्रभु ने देखा कि इस्राएल का दुख बहुत कड़वा था।

क्योंकि वहाँ कोई नहीं बचा था, चाहे वह बंधुआ हो या स्वतंत्र, और इस्राएल की सहायता करने वाला कोई नहीं था। इसलिए, इस समय, जब इस्राएल के पास इस समस्या से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था, तब परमेश्वर ने इस्राएल पर दया दिखाई। श्लोक 27, लेकिन प्रभु ने यह नहीं कहा था कि वह स्वर्ग के नीचे से इस्राएल का नाम मिटा देगा।

इसलिए, उसने योआश के बेटे यारोबाम के हाथों से उन्हें बचाया। इसलिए, मुझे लगता है कि हमारे लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आठवीं शताब्दी में असीरियन संकट से पहले, हमारे पास पहले से ही ईश्वर की कृपा और दया का एक और उदाहरण है। ईश्वर ने यारोबाम द्वितीय के समय में लोगों को राहत दी और इस्राएल ने समृद्धि और आशीर्वाद और धन के इस अविश्वसनीय समय का आनंद लिया, जो उन्होंने अपने पिछले इतिहास में कभी अनुभव नहीं किया था।

दक्षिण में, यहूदा के दक्षिणी राज्य में, परमेश्वर ने उस राज्य को भी आशीर्वाद दिया था। आठवीं शताब्दी के आरंभ से मध्य भाग में, यहूदा में एक राजा था, उज्जियाह, जिसने एक लंबा और सफल शासन किया था। यहूदा ने बहुत समृद्धि का समय बिताया है।

जिस वर्ष उज्जियाह की मृत्यु हुई, उसी वर्ष यशायाह की पुस्तक में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने यशायाह को अपनी सेवकाई के लिए बुलाया क्योंकि लोगों ने इस लंबे और सफल राजा के शासन का अनुभव किया था। उन्होंने उसे अपना हितैषी माना है। और जब वह मरता है, तो यहूदा के राज्य को भी याद दिलाने की ज़रूरत होती है कि प्रभु तुम्हारा राजा है।

उसने तुम्हें आशीर्वाद का यह समय दिया है, लेकिन तुम उससे दूर हो गए हो। निकट भविष्य में क्या होने वाला है? तो, आठवीं शताब्दी में शास्त्रीय भविष्यवक्ताओं के उदय से पहले इस्राएल ने बहुत समृद्धि का आनंद लिया। अब, क्या उस समृद्धि और सभी आशीर्वादों ने इस्राएल की सीमाओं और सीमाओं का विस्तार किया, क्या योना ने लोगों को जो सकारात्मक भविष्यवाणी की थी, और अंततः उन्हें परमेश्वर की ओर वापस लाया? हम सोचते हैं कि परमेश्वर ने उनके लिए जो किया, आशीर्वाद के प्रकाश में, इस तथ्य के प्रकाश में कि यह अयोग्य था, क्या इसने लोगों को पश्चाताप की ओर अग्रसर किया? और मुझे लगता है कि हम मानव हृदय को अच्छी तरह से जानते हैं कि पुराने नियम में विभिन्न समयों पर, जब भी इस्राएल ने महान समृद्धि का अनुभव

किया, उन्हें परमेश्वर की ओर ले जाने और उन्हें यह एहसास कराने के बजाय कि परमेश्वर ने हमें आशीर्वाद दिया है, परमेश्वर ने हमें यह अद्भुत भूमि दी है, परमेश्वर ने हमारे साथ अपने वादों को पूरा किया है, इस तथ्य के बावजूद कि हम इसके लायक नहीं थे।

कृतज्ञता पैदा करने के बजाय, इसने इस्राएल के लोगों को ऐसा करने के लिए प्रेरित किया कि वे अपने जीवन में परमेश्वर को पीछे छोड़ दें, उसे भूल जाएँ, प्रभु के बजाय अपने राजाओं और अपने मानवीय नेताओं पर भरोसा करें। और परमेश्वर के बजाय उनके जीवन का केंद्र बन जाने के बजाय, उनकी संपत्ति, उनकी समृद्धि, उनका आराम, ये सभी चीजें उनके जीवन का केंद्र बन गईं। व्यवस्थाविवरण की पुस्तक ने इस्राएल के लोगों को चेतावनी दी, और मूसा ने बहुत ही समझदारी से लोगों को यह बताया कि भूमि में जाने से पहले सावधान रहें, और आप भूमि के सभी आशीर्वादों का आनंद लें, आप उन घरों का आनंद लें जो परमेश्वर ने आपके लिए प्रदान किए हैं, वे शहर जो परमेश्वर ने आपको दिए हैं।

आप इस जगह पर हैं जहाँ दूध और शहद की भूमि है। सावधान रहें कि आप प्रभु को न भूलें। और मुझे लगता है कि हमारे अपने जीवन में, हम महसूस करते हैं कि जब भी हमारे पास वह सब कुछ होता है जिसकी हमें ज़रूरत होती है, जब भी हम सहज होते हैं, तो यह महसूस करने की प्रवृत्ति होती है, या यह भूलने की प्रवृत्ति होती है कि हम आखिरकार हर चीज़ के लिए भगवान पर निर्भर हैं।

और उस आशीर्वाद के बजाय जो हमें अंततः ईश्वर का अनुसरण करने और उनकी सेवा करने तथा उनके द्वारा हमें दी गई सभी चीज़ों के लिए आभारी होने के लिए प्रेरित करता है, कृतघ्न बनने की प्रवृत्ति होती है। और हमारे पास जो धन या संपत्ति है उस पर ध्यान केंद्रित करने की प्रवृत्ति होती है बजाय इसके कि हम अपने जीवन में ईश्वर को पहले स्थान पर रखें। और मुझे लगता है कि अमेरिकियों के रूप में हमने जो भौतिक समृद्धि का आनंद लिया है और पश्चिम में आम तौर पर लोगों की समृद्धि अक्सर ऐसी चीज़ रही है जिसने हमें ईश्वर से दूर कर दिया है।

प्राचीन इस्राएल में भी यही हुआ था। और इसलिए, मैं चाहता हूँ कि आप आमोस जैसे भविष्यवक्ता के मंत्रालय की कठिनाई के बारे में सोचें। इस्राएल इस समय से बाहर आ रहा है, वे अपने इतिहास में इस अवधि के अंत में हैं जहाँ उन्होंने इस महान समृद्धि का आनंद लिया है।

यहूदा में, उज्जियाह के शासनकाल में आशीर्वाद और समृद्धि का एक समान अनुभव हुआ है। आमोस जैसे भविष्यवक्ता या दक्षिण में यशायाह या मीका जैसे भविष्यवक्ता के लिए यह कितना कठिन था? उनके लिए यह कहना कितना कठिन था कि, यह समृद्धि जिसका आपने आनंद लिया है, वह समाप्त होने वाली है। और आप यह नहीं समझते कि जब आप इस अच्छे समय और इस समय का आनंद ले रहे हैं, जब यह राष्ट्रीय आशीर्वाद और समृद्धि का समय रहा है, तो आप यह नहीं समझते कि आपदा बिल्कुल करीब आ रही है।

और परमेश्वर आठवीं सदी के मध्य में यारोबाम के शासनकाल के बाद और यारोबाम के बाद आने वाले हर राजा को उठाने वाला है। उसके राजवंश का अंत उसके कुछ समय बाद ही होने

वाला है। और फिर उसके बाद आने वाला हर राजा कमज़ोर और अप्रभावी होने वाला है, और अंततः उन पर असीरियों का प्रभुत्व होने वाला है।

एक भविष्यवक्ता, आमोस के रूप में, इस दृश्य पर कदम रखना और लोगों को आने वाले न्याय के बारे में आश्वस्त करना कितना मुश्किल था? मैं कल्पना कर सकता हूँ कि जब लोगों ने अभूतपूर्व समृद्धि के इस समय का अनुभव किया होगा, तो वे कह रहे होंगे, आमोस, तुम किस बारे में बात कर रहे हो? तुम इतने भयभीत क्यों हो? हमने राष्ट्रीय आशीर्वाद के इस महान समय का आनंद लिया है। अब भगवान हमें क्यों दंडित करेंगे? लेकिन यह शास्त्रीय भविष्यवक्ताओं का काम था। संदेश की तात्कालिकता, संदेश की तीव्रता, कभी-कभी संदेश का क्रोध, अत्यधिक बयानबाजी, भगवान के क्रोध का सफेद पानी जिसके बारे में हमने पहले बात की थी।

इसका कारण यह है कि भविष्यवक्ताओं को उन लोगों को जगाना है जिन्होंने इस अविश्वसनीय आशीर्वाद के समय का अनुभव किया है। और अब न्याय आने का समय आ गया है। पॉल गिलक्रिस्ट यह कहते हैं।

उनका कहना है कि इस्राएल का धर्मत्याग असीरियन साम्राज्यवाद का उत्प्रेरक था। हम राजनीतिक और सैन्य दोनों ही दृष्टि से सभी कारणों पर गौर कर सकते हैं कि आठवीं शताब्दी के मध्य में असीरियन एक प्रमुख साम्राज्य क्यों बन गए। लेकिन धार्मिक कारण, धार्मिक व्याख्या, जो पुराना नियम हमें इस बारे में बताता है, वह यह है कि परमेश्वर इस महान साम्राज्य को खड़ा करने जा रहा है।

परमेश्वर अश्शूर के राजाओं को उनके साम्राज्यवादी इरादों और इच्छाओं के साथ खड़ा करने जा रहा है क्योंकि परमेश्वर अंततः इस राष्ट्र का उपयोग करने जा रहा है। परमेश्वर इन लोगों का उपयोग इस्राएल को दंडित करने और यहूदा को उनकी वाचा के प्रति विश्वासघात के लिए दंडित करने के लिए करने जा रहा है। वर्ष 745 में, यह इस सभी चर्चा में एक महत्वपूर्ण वर्ष है।

वर्ष 745 में, असीरिया में एक नया ऊर्जावान शासक उभरता है और उसका नाम है तिग्लथ-पाइलसर III। तिग्लथ-पाइलसर III नव-असीरियन साम्राज्य का संस्थापक बनने जा रहा है जो 125 वर्षों तक चला। तिग्लथ-पाइलसर एक महान नेता था।

वह एक ऊर्जावान राजा था। वह एक प्रभावी प्रशासक था। अश्शूरियों के बारे में एक बात सिर्फ़ उनकी सेना की प्रभावशीलता, शक्ति और ताकत ही नहीं थी, बल्कि प्रशासनिक कौशल भी था जिसके साथ अश्शूर के नेता उस सेना का इस्तेमाल करते थे।

परमेश्वर इस नए ऊर्जावान शासक और उसके द्वारा स्थापित साम्राज्य का उपयोग अंततः इस्राएल को दण्डित करने, आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में इस्राएल को निर्वासित करने के लिए करने जा रहा है। भविष्यवक्ता यशायाह यशायाह अध्याय 10 में इसके बारे में बात करने जा रहा है। वह इस बारे में बात करने जा रहा है कि कैसे परमेश्वर इस्राएल के लोगों पर न्याय के साधन के रूप में असीरियन साम्राज्य का उपयोग करता है।

मैं उस अंश पर एक नज़र डालना चाहूँगा। यशायाह अध्याय 10, श्लोक 5, प्रभु कहते हैं, अरे अशशूर, मेरे क्रोध की छड़ी, उनके हाथों में मेरी क्रोध की छड़ी है। तो, प्रभु कहते हैं, अशशूर की सेना सिर्फ़ एक शक्तिशाली सैन्य मशीन नहीं है जिसे टिग्लथ-पिलेसर III ने बनाया है।

असीरियन सेना आखिरकार मेरी सज़ा लाने का साधन है। इसलिए टिग्लथ-पिलेसर ने नव-असीरियन साम्राज्य की स्थापना की। वह फिर से पश्चिम की ओर देखने लगा, जैसा कि नौवीं सदी में असीरियन राजाओं ने किया था।

आंतरिक समस्याओं से निपटा जा चुका है। असीरिया मजबूत है, यह शक्तिशाली है, यह फिर से शक्तिशाली है। वह अपनी सेनाएँ चलाना शुरू करने जा रहा है और वह सीरिया-फिलिस्तीन में इन अभियानों को अंजाम देना शुरू करने जा रहा है।

प्रभु कहते हैं, टिग्लथ-पिलेसर के अपने ही इरादे और अपनी ही योजनाएँ हो सकती हैं। वह सिर्फ़ एक सैन्य नेता नहीं है। वह सिर्फ़ एक महान राजा नहीं है।

वह अंततः मेरा साधन है क्योंकि मैं संप्रभु हूँ, यहाँ तक कि इस बुतपरस्त राजा और यहाँ तक कि इन बुतपरस्त सेनाओं पर भी। मुझे लगता है कि आज पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं को पढ़ने से हमारे लिए एक लाभ यह है कि हमें आज हमारी दुनिया में चल रही सभी चीज़ों पर इस्राएल के परमेश्वर की संप्रभुता की याद दिलाई जाती है। आज हमारी दुनिया में जो कुछ भी होता है, उसे अंततः निर्धारित करने वाला व्यक्ति हमारे राजनीतिक नेता नहीं हैं।

हम अक्सर कहते हैं कि संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रपति पृथ्वी पर सबसे शक्तिशाली व्यक्ति है, लेकिन परमेश्वर की तुलना में, आखिरकार उसकी शक्ति कुछ भी नहीं है। परमेश्वर पृथ्वी के राजाओं को अपनी इच्छा और अपने डिजाइनों को पूरा करने के लिए उपयोग करता है, नियंत्रित करता है और चलाता है। एक अर्थ में, परमेश्वर इस महान शतरंज की बिसात पर अध्यक्षता कर रहा है।

मानव शासक और मानव नेता और सरकारें और सेनाएँ और राज्य अंततः परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं और उन चीज़ों के लिए परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हैं जो वे करते हैं, उनके द्वारा की गई दुष्टता के लिए, और उन बुराइयों के लिए जिनके लिए वे ज़िम्मेदार हैं। लेकिन परमेश्वर, उनकी बुराई और उनके पाप और उनके विद्रोह के बीच में भी, और यहाँ तक कि कभी-कभी जब राष्ट्र और राज्य परमेश्वर के चेहरे पर अपनी मुट्ठी हिलाते हैं, तब भी परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा कर रहा है। जब मैं भविष्यवक्ताओं को पढ़ता हूँ तो मुझे याद आता है कि आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में दुनिया में जो कुछ भी चल रहा था, उस पर परमेश्वर का नियंत्रण था।

आज जब हम अपने समाचार पत्र पढ़ते हैं, तो हमें याद दिलाना चाहिए कि 21वीं सदी में हमारी दुनिया में जो कुछ भी हो रहा है, उसके नियंत्रण में ईश्वर है। मध्य पूर्व में जो कुछ भी हो रहा है, उसके बारे में ईश्वर जानता है। ईश्वर उस पर नियंत्रण रखता है।

हमारे देश में जो कुछ भी हो रहा है और सभी संकट, नैतिक संकट, आर्थिक संकट, भगवान उन पर नियंत्रण रखते हैं। हम यह दिखावा कर सकते हैं कि हमारी सरकार या हमारी सेनाएँ, वे



अंतिम उत्तर हैं। यहाँ तक कि वे व्यक्ति, यहाँ तक कि वह शक्ति भी अंततः भगवान के नियंत्रण में है।

भविष्यवक्ता यशायाह कहने जा रहा है, अशशूर, हाँ, वे एक शक्तिशाली राष्ट्र हैं, वे एक शक्तिशाली साम्राज्य हैं, लेकिन वे अंततः केवल एक छड़ी हैं जिसका उपयोग मैं अपनी इच्छा पूरी करने और अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अपने हाथ में कर रहा हूँ। बेबीलोन के संकट के समय, भविष्यवक्ता यिर्मयाह आने वाला है और नबूकदनेस्सर और बेबीलोनियों के बारे में मूल रूप से यही बात कहने वाला है। यिर्मयाह अध्याय 27 और यिर्मयाह 29 में, भविष्यवक्ता यिर्मयाह कहने जा रहा है, नबूकदनेस्सर मेरा सेवक है।

इसका मतलब यह नहीं है कि नबूकदनेस्सर प्रभु को जानता था। इसका मतलब यह नहीं है कि नबूकदनेस्सर का परमेश्वर के साथ कोई रिश्ता था। इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर ने बेबीलोन की सरकार और सेना द्वारा किए गए सभी कामों को मंजूरी दी थी, क्योंकि अंततः उनका न्याय किया जाना था और उन्हें इसके लिए जवाबदेह ठहराया जाना था।

लेकिन अंततः, अंतिम अर्थ में, नबूकदनेस्सर परमेश्वर का सेवक था क्योंकि वह परमेश्वर के उद्देश्य और परमेश्वर के इरादों को पूरा कर रहा था। यिर्मयाह अध्याय 50 में यिर्मयाह कहेगा कि नबूकदनेस्सर हथौड़ा है। बेबीलोन की सेना वह हथौड़ा है जिसका उपयोग परमेश्वर पृथ्वी के लोगों को दंडित करने के लिए कर रहा है।

यह बिल्कुल वैसा ही है जैसा कि यशायाह ने यहाँ कहा था जब उसने कहा कि अशशूर मेरे क्रोध की छड़ी और मेरे हाथ की लाठी है। यिर्मयाह भी इस बारे में बात करेगा कि यहोवा योद्धा है जो अंततः यरूशलेम के खिलाफ बेबीलोन की सेनाओं का नेतृत्व करता है। यिर्मयाह अध्याय 21।

और यिर्मयाह 27 में, परमेश्वर ने नबूकदनेस्सर के हाथों में दुनिया के राज्यों का नियंत्रण दे दिया है। उसने नबूकदनेस्सर को धरती पर रहने वाले जानवरों पर भी नियंत्रण दिया है। और यिर्मयाह की बयानबाजी मूल रूप से नबूकदनेस्सर को एक नए आदम के रूप में चित्रित करती है।

परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए इस मूर्तिपूजक राजा का उपयोग करता है। लेकिन यिर्मयाह यह भी कहने जा रहा है कि परमेश्वर द्वारा पृथ्वी के राष्ट्रों को दण्डित करने के लिए बेबीलोन का उपयोग करने के बाद, उन सभी राष्ट्रों के बाद जिन्हें नबूकदनेस्सर ने हराया, जीता और नष्ट किया, जब वे परमेश्वर के क्रोध का प्याला पी लेंगे, तो एक समय ऐसा भी आएगा जब बेबीलोनवासी परमेश्वर के क्रोध और परमेश्वर के क्रोध का प्याला पी लेंगे। वे परमेश्वर से स्वतंत्र नहीं हैं।

जब इस्राएली और यहूदा के लोग संकट के इन दिनों से गुज़र रहे थे, तो हमेशा यह सोचने की प्रवृत्ति थी कि क्या आठवीं शताब्दी में अशशूर के देवता इस्राएल के देवताओं से महान थे? अशशूर हमें कैसे हरा सकते थे, जबकि प्रभु परमेश्वर, जो कि सर्वोच्च संप्रभु राजा है, प्रभु हमें इन सेनाओं से कैसे पराजित होने दे सकता है? क्या इसका मतलब यह है कि अशशूर की सेनाएँ यहोवा की सेनाओं से बड़ी हैं? छठी और सातवीं शताब्दी के दौरान, जब बेबीलोनियों ने यहूदा पर अतिक्रमण करना शुरू किया, तो क्या बेबीलोन के देवता यहूदा के देवताओं से महान थे? क्या

इसीलिए हम पराजित हुए हैं? पुराने नियम के भविष्यवक्ता लोगों को इस बारे में एक धार्मिक समझ देना चाहते हैं। इस बीच में परमेश्वर शक्तिहीन नहीं है। परमेश्वर वास्तव में अपने संप्रभु उद्देश्यों को पूरा कर रहा है।

यशायाह की पुस्तक के दूसरे भाग में भविष्यवक्ता यशायाह फारसी राजा कुसू के बारे में भी कहने जा रहा है, कि परमेश्वर इस प्रक्रिया के अंत में बेबीलोनियों की जगह लेने के लिए उसे खड़ा करने जा रहा है। वह कहने जा रहा है, कुसू मेरा चरवाहा है। यह यहाँ तक कहने जा रहा है, कुसू मेरा अभिषिक्त है, हिब्रू शब्द मेसियाच, हमारे शब्द मसीहा का पूर्ववर्ती है।

साइरस मेरा चरवाहा और मसीहा है। फिर से, इसलिए नहीं कि साइरस इस्राएल के परमेश्वर का भय मानता था, इसलिए नहीं कि साइरस एकेश्वरवादी था। हम उसके शिलालेखों और चीजों से जानते हैं कि वह एकेश्वरवादी नहीं था।

इसलिए नहीं कि साइरस ने प्रभु को एकमात्र सच्चे ईश्वर के रूप में मान्यता दी, बल्कि इसलिए कि ईश्वर साइरस और फारसियों का उसी तरह उपयोग करेगा जिस तरह उसने तिग्लथ-पिलेसर और अशूरियों का उपयोग किया था, उसी तरह जिस तरह उसने नबूकदनेस्सर और बेबीलोनियों का उपयोग किया था। ईश्वर इस पूरी प्रक्रिया को नियंत्रित करता है। आठवीं शताब्दी में, इज़राइल और यहूदा इस न्यायपूर्ण राष्ट्रीय आपदा के समय में प्रवेश करने वाले हैं, जहाँ वे इन साम्राज्यवादी शक्तियों की मुट्टी में हैं।

भविष्यवक्ता चाहते थे कि उन्हें पता चले कि परमेश्वर सर्वोच्च है और परमेश्वर ही सब कुछ नियंत्रित करता है। जैसा कि हम भविष्यवक्ताओं को सिखाते हैं और जैसा कि हम आज लोगों को भविष्यवक्ताओं के बारे में उपदेश देते हैं, मुझे लगता है कि कभी-कभी हमारे लिए लोगों को यह याद दिलाना बहुत ज़रूरी होता है कि परमेश्वर अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य को नियंत्रित करता है। परमेश्वर अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद के बारे में सब कुछ जानता है और परमेश्वर, कभी-कभी, अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए दुष्ट लोगों और दुष्ट राष्ट्रों का उपयोग भी करेगा।

आठवीं शताब्दी में जब असीरियन संकट शुरू हुआ, तब भविष्यवक्ता लोगों को यह धार्मिक-राजनीतिक समझ दे रहे थे। पाँचवीं आयत के बाद भविष्यवक्ता यशायाह आगे कहते हैं, असीरिया मेरे क्रोध की छड़ी है, उनके हाथों में मेरी जलजलाहट की लाठी है, मैं उसे एक नास्तिक राष्ट्र के विरुद्ध भेजता हूँ। यशायाह यहाँ तक कहते हैं कि इस्राएल और यहूदा एक नास्तिक राष्ट्र हैं।

अन्य स्थानों पर यशायाह उनकी तुलना सदोम और अमोरा से करेगा। यही कारण है कि परमेश्वर उनके विरुद्ध अशूर की सेना भेजने जा रहा है। लेकिन समस्या यह थी कि अशूर की सेना, तिग्लथ-पिलेसर, नबूकदनेस्सर, बाद में, यह नहीं पहचान पाए कि वे परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा कर रहे थे।

तिग्लथ-पिलेसर के इस्राएल आने के बजाय क्योंकि परमेश्वर ने उसे ऐसा करने का आदेश दिया था, या नबूकदनेस्सर के यहूदा आने के बजाय क्योंकि वह जानता था कि वह परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहा है, अंततः, ये राजा अपनी साम्राज्यवादी इच्छाओं और योजनाओं को पूरा कर रहे थे।

अशूरियों ने पवित्र कार्य करने के बजाय, वास्तव में भयानक अत्याचार और हिंसा की, क्योंकि वे पश्चिम की ओर बढ़ रहे थे और इस्राएल और यहूदा जैसे लोगों को अपने अधीन करना शुरू कर दिया था। भविष्यवक्ता यशायाह ने इसे स्वीकार किया है।

वह यशायाह अध्याय 10, यशायाह 10.7 में इस अंश में अशूर के राजा के बारे में यह कहता है, लेकिन अशूर का राजा ऐसा इरादा नहीं रखता है। दूसरे शब्दों में, वह आने और परमेश्वर की इच्छा पूरी करने का इरादा नहीं रखता है। उसका दिल ऐसा नहीं सोचता है, लेकिन उसके दिल में राष्ट्रों को नष्ट करने और काटने की इच्छा है, कुछ नहीं।

और अशूर का राजा इस्राएल और यहूदा को देखेगा और कहेगा, क्या ये राज्य और ये राष्ट्र उन अन्य राष्ट्रों से भिन्न हैं जिन्हें मैंने जीता है? क्या सामरिया और यहूदा की मूर्तियाँ और चित्र इन अन्य मूर्तिपूजक लोगों की मूर्तियों, चित्रों और देवताओं से अधिक महान हैं? मैं उन्हें वैसे ही जीतूंगा जैसे मैंने अन्य सभी लोगों को जीता था। जब बाद में दक्षिणी राज्य सन्हेरीब में यरूशलेम शहर की घेराबंदी की जाती है, तो अशूर का राजा यहूदा के लोगों के पास आएगा और कहेगा, हिजकिय्याह की बात मत सुनो या अपने नेताओं की बात मत सुनो जो तुमसे कह रहे हैं कि तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें छुड़ाने वाला है। तुम्हारा परमेश्वर तुम्हें छुड़ाने में इन अन्य लोगों के सभी देवताओं से अधिक प्रभावी नहीं है या अधिक प्रभावी नहीं होने वाला है।

और इसलिए, इन असीरियन राजाओं की ईशनिंदा के कारण, क्योंकि वे इन मानव शासकों का हिस्सा हैं जो भगवान के चेहरे पर अपनी मुट्ठी हिलाते हैं और कहते हैं, हम जो चाहें करेंगे, क्योंकि वे अंततः अपनी साम्राज्यवादी इच्छाओं को पूरा करने के लिए आते हैं और क्योंकि वे इसे हिंसक और भयानक तरीके से करते हैं, भगवान कहते हैं, मैं अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए उनका उपयोग करने जा रहा हूँ। लेकिन मैं उन्हें हिंसा और उनकी दुष्टता के लिए जवाबदेह भी ठहराने जा रहा हूँ। और इसलिए, भगवान इन राजाओं का उपयोग करता है।

वह शतरंज की बिसात पर शासन कर रहा है, लेकिन ईश्वर तिग्लथ-पिलेसर, सन्हेरीब और इन सभी असीरियन राजाओं द्वारा किए गए नैतिक बुरे कामों में भाग नहीं लेता है। असीरियन सेना और असीरियन लोगों के बारे में हम जो कुछ जानते हैं, उनमें से एक यह है कि यह एक ऐसा साम्राज्य था, जो कई मायनों में हिंसा, रक्तपात और धमकी पर आधारित था। जैसे-जैसे तिग्लथ-पिलेसर की सेनाएँ फैलने लगीं और उसने अपना साम्राज्य स्थापित किया, उनके द्वारा ऐसा करने का एक तरीका यह था कि वे अपने आस-पास के लोगों को अपनी सैन्य शक्ति और हिंसा से डराते थे।

जब हम असीरियन शिलालेखों को देखते हैं, जब हम असीरियन अभिलेखों को देखते हैं, जब हम असीरियन कला को देखते हैं, तो हम हिंसा, रक्तपात और सैन्य विजय पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उदाहरण के लिए, राजा सेनचेरिब, जो 701 ईसा पूर्व में यरूशलेम शहर को घेरने वाला राजा था, अपने दुश्मनों और अपनी सैन्य विजय के बारे में बात करते हुए यह कहता है; मोटे बैलों की तरह, मैंने उन्हें जल्दी से काट दिया और उनकी रक्षा की। मैंने मेमनों की तरह उनका गला काट दिया।

मैंने उनके जीवन को ऐसे काट दिया जैसे कोई तार को काटता है। और इस तरह, आपको इन असीरियन राजाओं द्वारा की गई हिंसा का अंदाजा हो जाता है। सातवीं शताब्दी के अशरबनिपाल ने अपने एक शिलालेख में यह लिखा है, उनके खून से मैंने पहाड़ को ऊन की तरह लाल रंग दिया और बाकी पहाड़ों की खाइयों और झरनों को निगल लिया।

मैंने उनके बंदी बनाए गए लोगों और उनकी संपत्ति को छीन लिया। मैंने उनके लड़ाकों के सिर काट दिए और उनसे उनके शहर के सामने एक मीनार बनवाई। मैंने उनके किशोर लड़के-लड़कियों को जला दिया।

और इसलिए जब हम इतिहास के बारे में सोचते हैं, युद्ध की भयावहता और हम उससे कितनी नफरत करते हैं और हम उसका कितना विरोध करते हैं, तो असीरियन ने इसे अपनी रणनीति के हिस्से के रूप में इस्तेमाल किया ताकि अंततः इज़राइल और यहूदा जैसे छोटे देशों को डराकर अपने अधीन कर लिया जाए। अगर हम असीरियन कला को देखें, तो हमें तस्वीरें दिखाई देती हैं, और हम शहर की दीवारों के बाहर कटे हुए सिर के ढेर देखते हैं। हम शवों को टुकड़े-टुकड़े होते हुए देखते हैं।

हम ऐसे चित्र देखते हैं जिनमें शहरों पर विजय प्राप्त करने के बाद लोगों को लाठियों पर लटकाया जाता है। यहूदियों के साथ भी यही होता है, इज़राइल और यहूदा दोनों में, जब वे असीरियनों से हार जाते हैं। असीरियन कला का एक विशेष टुकड़ा है जो असीरियन अत्याचारों के विभिन्न कृत्यों को दर्शाता है।

एक पैनल में, हम एक असीरियन सैनिक को एक एलामाइट युद्ध बंदी को डंडे से पीटकर मारते हुए देखते हैं। दूसरी जगह, हम देखते हैं कि असीरियन सैनिक एक एलामाइट युद्ध बंदी की खाल उतार रहे हैं, उसे यातना देने के लिए उसे ज़िंदा अवस्था में ही काट रहे हैं और छील रहे हैं। असीरियन सैनिक दूसरे कैदी के मुँह में हाथ डालकर उसकी जीभ बाहर निकाल रहे हैं।

और इसलिए, यह प्रवृत्ति है, और मुझे लगता है कि यह प्राचीन निकट पूर्व में सभी सेनाओं के लिए सच था। युद्ध के बारे में कोई जिनेवा सम्मेलन नहीं है, लेकिन यह कुछ ऐसा है जिस पर असीरियन बयानबाजी के हिस्से के रूप में विशेष रूप से जोर दिया जाता है। जब सेनचेरिब ने यहूदा में लाकीश शहर पर कब्जा कर लिया, तो वह अपने महल में वापस चला गया। उसने दीवारों को लाकीश की विजय के चित्रों से सजाया क्योंकि यह उसके करियर की सबसे महत्वपूर्ण सैन्य उपलब्धियों में से एक थी।

और इसलिए यह सोचना दिलचस्प है कि आमोस और आठवीं सदी के इन भविष्यवक्ताओं ने अपनी सेवकाई शुरू की, परमेश्वर क्रूर, हिंसक, कई मायनों में घृणित लोगों को ले रहा है, जिनके पास इन लोगों के खिलाफ़ अपनी खुद की योजनाएँ हैं, जो हिंसा करते हैं, जो ये सभी भयानक काम करते हैं। परमेश्वर उन्हें अपने अधर्मी लोगों पर न्याय के साधन के रूप में इस्तेमाल कर रहा है। हम गलातियों में पढ़ते हैं, यह सिद्धांत कि मनुष्य जो कुछ बोता है, वही काटेगा।

और मुझे लगता है कि अगर हम बाइबल में कटाई और बोने की सबसे प्रभावशाली छवियों में से एक चाहते हैं, तो हम आठवीं शताब्दी में इस्राएल और यहूदा के साथ जो हुआ उसके बारे में सोच

सकते हैं। उन्होंने सैकड़ों वर्षों तक परमेश्वर के प्रति अवज्ञा और विश्वासघात के बीज बोए हैं। वे उस पाप के परिणाम भुगतने जा रहे हैं।

भविष्यवक्ता होशे कहेगा, तुमने हवा बोई है, और इस्राएल ने अपनी दुष्टता, अपनी सैन्य रणनीतियों, गठबंधनों में अपनी राजनीतिक भागीदारी के द्वारा ऐसा किया है। तुम बवंडर काटोगे। और वह बवंडर असीरियन सेना होने जा रही थी। वे इस्राएल पर आक्रमण करने जा रहे थे और परमेश्वर की सज़ा देने जा रहे थे।

हम परमेश्वर की पवित्रता, पाप के प्रति परमेश्वर की घृणा, पाप की गंभीरता और उसके परिणामों को तब समझते हैं जब हम देखते हैं कि आठवीं शताब्दी में इस्राएल और यहूदा के साथ उनकी अवज्ञा के परिणामस्वरूप क्या होने वाला है। इसलिए तिग्लथ-पिलेसर अपने साम्राज्य का विस्तार करने जा रहा है। उसकी सेनाएँ पश्चिम की ओर बढ़ने जा रही हैं और वे इस्राएल और यहूदा दोनों को अपने अधिकार और प्रभाव में लाने जा रही हैं।

वर्ष 722-721 तक, उस विशेष वर्ष में इस्राएल का उत्तरी राज्य अश्शूरियों के हाथों में चला जाएगा। उत्तरी राजधानी सामरिया अश्शूरियों के हाथों में चली जाएगी। और उस समय, उत्तरी राज्य बंदी बना लिया जाएगा।

दस उत्तरी जनजातियाँ खो जाएँगी और अश्शूर एक अश्शूर प्रांत बन जाएगा। यहूदा का दक्षिणी राज्य इस संकट से बच जाएगा। लेकिन आहाज के अधीन यहूदा का दक्षिणी राज्य भी अश्शूरियों का एक जागीरदार बन जाएगा।

आठवीं शताब्दी के अंत में असीरियन दक्षिण की ओर बढ़े; असीरियन अभिलेखों में कहा गया है कि उन्होंने यहूदा के 46 अलग-अलग शहरों पर कब्ज़ा कर लिया और यहूदा के राजा हिजकिय्याह को पिंजरे में बंद पक्षी की तरह फँसा दिया। लेकिन आखिरकार हिजकिय्याह के विश्वास की वजह से, क्योंकि वह परमेश्वर की ओर मुड़ता है, यहूदा को अगले 140 वर्षों के लिए बचा लिया जाएगा। लेकिन वे असीरियन सेना और असीरियन आक्रमण के प्रभावों का भी अनुभव करने जा रहे हैं।

आमोस और होशे जैसे भविष्यवक्ताओं का काम लोगों को इस संकट के प्रति जागरूक करना है। आमोस 760 से 750 ईसा पूर्व में दृश्य में आता है। यह यारोबाम द्वितीय के शासनकाल का अंत है।

यह बहुत बड़ी समृद्धि रही है। यह आमोस का काम है कि वह कहे कि समय समाप्त होने वाला है, और अब परमेश्वर अपने लोगों का न्याय करना शुरू करने जा रहा है। और मुझे लगता है कि जब हम आमोस के मंत्रालय की विशिष्ट परिस्थितियों और इसके समय को देखते हैं, तो तीन या चार चीजें हैं जो इज़राइल के इतिहास में इस विशेष बिंदु पर आमोस की भागीदारी के बारे में महत्वपूर्ण हैं।

मैं आमोस की पुस्तक के पहले दो छंदों को पढ़कर शुरू करना चाहता हूँ और ऐतिहासिक सेटिंग और पृष्ठभूमि का परिचय देना चाहता हूँ। इस असीरियन संकट के बीच आमोस कहाँ फिट बैठता

है? और आमोस 1:1-2 कहता है, आमोस के शब्द, जो तकोआ के चरवाहों में से था, जो उसने यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनों में और इस्राएल के राजा योआश के पुत्र यारोबाम के दिनों में इस्राएल के बारे में देखा था, और यह कहता है, भूकंप से दो साल पहले। ठीक है।

तो, इस बड़े असीरियन संकट के बीच आमोस की सेवकाई के समय के बारे में कुछ बातें महत्वपूर्ण हैं। जैसा कि मैंने कहा, आमोस की सेवकाई का समय आम तौर पर 760 से 750 ईसा पूर्व के बीच माना जाता है। इसका मतलब यह है कि वह वास्तव में उन भविष्यवक्ताओं की शुरुआत में है जो लोगों को चेतावनी देना शुरू करने जा रहे हैं कि न्याय आने वाला है।

आमोस को अपनी सेवकाई पूरी करने में अभी 30 या 40 साल बाकी हैं। और इसलिए जिन लोगों ने इस आशीर्वाद और समृद्धि का अनुभव किया है, उनके लिए उसके संदेश को गंभीरता से लेना बहुत मुश्किल होगा। कल्पना कीजिए कि अगर आप आमोस हैं और इन लोगों को समझाने की कोशिश कर रहे हैं। यही वह कठिनाई है जो उसे अपनी सेवकाई में है।

आमोस द्वारा इस निर्णय को जितना संभव हो सके उतना भयानक बनाने का कारण यह है कि एक उम्मीद है कि अंततः गंभीरता इन लोगों को जगाएगी। दूसरी बात यह है कि इस समय इस्राएल के इतिहास में आमोस की सेवकाई और संदेश की गंभीरता उसकी बुलाहट की परिस्थितियों में परिलक्षित होती है। ठीक है।

हो सकता है कि हमने पहली आयत पढ़ते समय इस पर ध्यान न दिया हो, लेकिन इसमें आमोस के शब्द हैं, जो टेकोआ में चरवाहों में से एक था। टेकोआ यहूदा के दक्षिणी राज्य में एक शहर या गाँव था। और परमेश्वर वास्तव में आमोस को यहूदा के दक्षिणी राज्य को छोड़कर इस्राएल के उत्तरी राज्य में इस संदेश का प्रचार करने के लिए बुलाता है।

ठीक है। यह संदेश इतना गंभीर है कि आमोस यहूदा में अपना घर छोड़कर उत्तरी इस्राएल राज्य में जाकर इस संदेश का प्रचार करने जा रहा है। यह हमें उत्तरी राज्य में भविष्यवक्ताओं की स्थिति के बारे में भी कुछ बता सकता है।

यदि परमेश्वर को इस संदेश का प्रचार करने के लिए एक वफ़ादार भविष्यवक्ता ढूँढना है, तो उसे ऐसा करने के लिए दक्षिणी राज्य से किसी को बुलाना होगा। और इसलिए आमोस दक्षिण और उत्तर के बीच की सीमा को पार करने जा रहा है, और एक बाहरी व्यक्ति और एक विदेशी के रूप में और दक्षिण के घृणास्पद लोगों के हिस्से के रूप में, आमोस अपना संदेश उत्तर में ले जाएगा और वहाँ प्रचार करेगा। परमेश्वर आमोस को एक व्यवसाय और जीवन की एक ऐसी स्थिति से भी बाहर बुलाएगा जिसका भविष्यवक्ता होने से कोई लेना-देना नहीं है।

हम आमोस के बुलावे के बारे में कुछ और देखते हैं और आमोस के अध्याय 7, श्लोक 14 और 15 में दिए गए कथन में इस बारे में एक और कथन देखते हैं। अंततः, उत्तर के याजकों में से एक, अमाज्याह, आमोस द्वारा न्याय के इस संदेश का प्रचार करने के बाद, और हम ठीक से नहीं जानते कि उसका मंत्रालय कितने समय तक चला। यह एक छोटा समय हो सकता है, यह कई साल हो सकते हैं, लेकिन अंततः, अमाज्याह कहने जा रहा है, हमें प्रचार करना बंद करो।

घर वापस जाओ, यहूदा वापस जाओ, और राजा के पवित्रस्थान के खिलाफ़ बोलना बंद करो। हम अब तुम्हारे न्याय के संदेश को सुनना नहीं चाहते। और आमोस कहने जा रहा है, ठीक है, जब भगवान ने मुझे बुलाया, जब भगवान ने कहा, मैं केवल इसलिए यहाँ हूँ क्योंकि भगवान ने मुझे बुलाया और मैं कोई नबी या नबी का बेटा नहीं था, बल्कि मैं एक चरवाहा और गूलर के अंजीर का एक ड्रेसर था।

लेकिन प्रभु ने मुझे झुंड के पीछे चलने से रोक लिया, और प्रभु ने मुझसे कहा, जाओ और मेरे लोगों इस्राएल के लिए भविष्यवाणी करो। इसलिए, परमेश्वर ने बहुत ही अनोखी परिस्थितियों में आमोस को बुलाया। आमोस कोई भविष्यवक्ता नहीं था।

और आमोस ने जो बयान दिया जब उसने कहा कि मैं न तो कोई भविष्यवक्ता था और न ही किसी भविष्यवक्ता का बेटा, तो उसकी कई अलग-अलग तरह से व्याख्या की गई। कुछ लोगों ने इसे एक सवाल के रूप में लिया है। क्या मैं कोई भविष्यवक्ता या भविष्यवक्ता का बेटा नहीं था? कुछ लोगों ने आमोस को इस तथ्य के बीच अंतर करते हुए देखा है कि वह एक द्रष्टा था, जो कि यहूदा में उनके पास मौजूद भविष्यवक्ता का प्रकार था, न कि एक भविष्यवक्ता, जो उत्तरी राज्य में प्रवक्ताओं में से एक था।

अन्य लोगों ने आमोस के इस कथन को सही माना है कि, मैं कोई पंथिक भविष्यवक्ता या राज्य का भविष्यवक्ता या आधिकारिक भविष्यवक्ता नहीं था। लेकिन शायद इस बात की सबसे स्वाभाविक समझ यह है कि मैं ईश्वर का भविष्यवक्ता नहीं था, जब तक कि ईश्वर ने हस्तक्षेप नहीं किया और मेरे जीवन में हस्तक्षेप करते हुए कहा, मैं चाहता हूँ कि तुम उत्तरी इज़राइल राज्य में जाओ। और उस समय, आमोस का पेशा एक भविष्यवक्ता और ईश्वर का प्रवक्ता बन गया।

तो, उस अनोखी परिस्थिति में जहाँ आमोस एक भविष्यवक्ता नहीं है, वह एक चरवाहा है। वह गूलर के पेड़ों की देखभाल करने वाला है। वह एक किसान है।

और भगवान उसे उससे दूर भेज देता है। इस संदेश की तात्कालिकता यह है कि भगवान उसे उठाकर ले जाता है। और एक सेमिनरी प्रोफेसर के रूप में, मैं या तो एक छात्र रहा हूँ, या मैं एक शिक्षक रहा हूँ जिसे भगवान ने सभी प्रकार के व्यवसायों, राजनीति, एथलेटिक्स, कानून के अभ्यास और व्यवसाय से बुलाया है।

और परमेश्वर ने लोगों से कहा, मैं चाहता हूँ कि तुम जाओ, और मैं चाहता हूँ कि तुम मनुष्य के लिए प्रचार करो। और लोग उस आह्वान का जवाब देते हैं। यही आमोस ने किया।

लेकिन आमोस के बुलावे की परिस्थितियाँ उस संदेश की गंभीरता को दर्शाती हैं जिसे प्रचार करने के लिए परमेश्वर ने उसे बुलाया है। मुझे लगता है कि आमोस के बुलावे के बारे में एक और बात है जिसे हमें ठीक करने की ज़रूरत है। जब हम आमोस के बारे में बात करते हैं कि वह एक चरवाहा और गूलर के पेड़ की देखभाल करने वाला था, और वह खेती और उस तरह के कामों में शामिल था, तो मैं अक्सर लोगों को आमोस को एक देहाती किसान या देहाती उपदेशक के रूप में वर्णित करते हुए सुनता हूँ और कहता हूँ कि परमेश्वर ने इस देहाती उपदेशक को उत्तरी राज्य में जाने के लिए बुलाया था।

दरअसल, अगर हम आमोस के वर्णन को देखें, तो पाठ शायद कुछ और सुझाता है। आमोस के अध्याय एक, श्लोक एक में आमोस को चरवाहा बताने के लिए जिस शब्द का इस्तेमाल किया गया है, वह चरवाहे के लिए सामान्य हिब्रू शब्द नहीं है। इसके बजाय, यह नोकाद शब्द है।

और वह शब्द नोकाद 2 राजाओं के अध्याय तीन, श्लोक चार में इस्तेमाल किया गया है, मेरा मानना है कि यह एकमात्र अन्य स्थान है जहाँ इसका उपयोग मोआबियों के राजा मेशा का वर्णन करने के लिए किया गया है, जिसमें कहा गया है कि वह एक चरवाहा था। और इसलिए, उस शब्द का सुझाव यह है कि आमोस केवल एक गरीब देश का उपदेशक या एक अशिक्षित व्यक्ति नहीं है, बल्कि आमोस एक ज़मींदार है जिसके पास बहुत सारी ज़मीनें और बहुत सारे पशुधन हैं। वह एक चरवाहा है और राजा के बराबर झुंडों का मालिक है।

और अपने व्यस्त जीवन के बीच, इस सारी दौलत के बीच, परमेश्वर का उसके जीवन पर बुलावा इतना गंभीर है कि परमेश्वर कहता है, मैं चाहता हूँ कि तुम जाओ और उत्तरी राज्य में प्रचार करो। और मुझे लगता है कि जब आमोस ने उन लोगों को अपने बुलावे की परिस्थितियों के बारे में बताया, और यह परमेश्वर का उन्हें संदेश की गंभीरता दिखाने का एक तरीका था जिसे आमोस उनके सामने घोषित करने आया था। दुर्भाग्य से, जब आमोस प्रचार करता है, तो अमास्या अंततः लोगों की प्रतिक्रिया को दर्शाता है।

हम यह सुनना नहीं चाहते। हमसे दूर चले जाओ। आमोस के बुलावे और इसके समय और असीरियन संकट में इसके फिट होने के बारे में चौथी बात यह है कि हम आमोस के अध्याय एक, श्लोक एक में क्या देखते हैं, आमोस की सेवकाई के बाद भी क्या होता है।

और याद रखें कि वहाँ पहले पद में बताया गया है कि उसने यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनों में, यारोबाम के दिनों में, इन दोनों समृद्ध और धनी राजाओं के दिनों में प्रचार किया, लेकिन उसने भूकंप के समय से दो साल पहले प्रचार किया। मेरा मानना है कि आमोस के मंत्रालय का विशिष्ट उद्देश्य, डिजाइन और इरादा लोगों को आने वाले न्याय के बारे में प्रचार करना था, और आमोस द्वारा उन्हें प्रचार करने के बाद परमेश्वर ने उन्हें चेतावनी भेजी। दो साल बाद, एक भूकंप आया जिसका अनुभव इज़राइल और यहूदा में हुआ।

और यह एक अनुस्मारक था; यह एक जागृत करने वाली पुकार थी। यह इस्राएल के लोगों पर परमेश्वर द्वारा एक और प्रहार था, ताकि उन्हें याद दिलाया जा सके कि न्याय आने वाला है। और मुझे लगता है कि इस आकस्मिक विवरण का उल्लेख पहली आयत में यह कहने के लिए किया गया है कि यह आमोस की चेतावनियों और न्याय के संदेशों की प्रामाणिकता थी।

परमेश्वर ने इस भूकंप को अपने लोगों को यह दिखाने के लिए भेजा कि भविष्य में और भी बड़ा न्याय आने वाला है। पुरातत्वविदों ने हमारे लिए पुष्टि की है कि जिस भूकंप के बारे में आमोस बात करता है, वह वास्तव में हुआ था। इज़राइल के उत्तरी भाग में हाज़ोर शहर में, स्ट्रेटस 6 में दीवारों को हुए नुकसान की एक पुरातात्विक खोज हुई है जो ईसा पूर्व 8वीं शताब्दी में हुई थी जो हमारे लिए इस भूकंप की गंभीरता की पुष्टि करती है।



परमेश्वर इस बात को लेकर गंभीर था कि क्या होने वाला था। परमेश्वर अपने लोगों को इस बारे में चेतावनी दे रहा था कि भविष्य में क्या होने वाला था। बाद में निर्वासन के बाद के भविष्यवक्ताओं में, छोटे भविष्यवक्ताओं के अंत में, हमें जकर्याह अध्याय 14, पद 5 में यह कथन मिलता है। जकर्याह 14.5 कहता है, तुम मेरे पहाड़ों की घाटी में भाग जाओगे, यहोवा के दिन के भविष्य के न्याय के बारे में बात करोगे, क्योंकि पहाड़ों की घाटी अज़ल तक पहुँच जाएगी।

और तुम वैसे ही भागोगे जैसे तुम यहूदा के राजा उज्जियाह के दिनों में आए भूकंप से भागे थे। और इसलिए वह भूकंप इतना महत्वपूर्ण था कि निर्वासन के बाद के समय में, इस्राएल और यहूदा में जो कुछ भी हुआ था, उसके बाद भी उन्हें यह याद था। आमोस का संदेश आने वाले न्याय की चेतावनी थी।

यह अश्शूर संकट की तैयारी थी। और यह भूकंप इस बात का प्रमाण था कि परमेश्वर के लोगों को इस संदेश को गंभीरता से लेने की ज़रूरत है। परमेश्वर लोगों को कई बार बहुत कठिन परिस्थितियों में सेवा करने के लिए बुलाता है।

परमेश्वर ने आमोस को लोगों को न्याय के लिए तैयार करने के लिए बुलाया। और परमेश्वर ने हमें उसके न्याय और उद्धार दोनों की घोषणा करने के लिए बुलाया है। और वह हमें यह घोषणा करने के लिए बुलाता है, भले ही वह संदेश लोकप्रिय न हो, भले ही वह ऐसा कुछ न हो जिसे लोग सुनना चाहते हों।

और आमोस की अपने बुलावे के प्रति निष्ठा, मुझे लगता है कि हमें याद दिलाती है कि परमेश्वर चाहता है कि हम भी वैसे ही करें और यदि हम उसके वचन का ईमानदारी से प्रचार करें तो परमेश्वर हमें पुरस्कृत करेगा।

यह डॉ. गैरी येट्स द्वारा लघु भविष्यवक्ताओं पर उनके व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह आमोस, असीरियन संकट की पृष्ठभूमि पर व्याख्यान 5 है।